लोक शक्ति योजना

प्रस्तुतकर्ता -

मानव संचेतना शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान

अमरकण्टक

संलग्न - मानव संचेतनावादी शिक्षा-संस्कार योजना का प्रारूप क्रम.

परिचय

आज मेधावीयों में यह आवश्यकता महसूस की जा रही है कि ऐसी लोकशक्ति तैयार हो जो स्वयं अपनी समस्याओं को दूर करें एवं स्वयं ही स्थानीय प्रबन्धन कार्य करे। इसके लिए स्थानीय लोगों की समिति बनाने और उन्हें अधिक अधिकार देने की चर्चा तथा कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किए गये हैं। पंचायती राज का सम्पूर्ण कार्यक्रम भी इसी मानसिकता के आधार पर निश्चित किया गया है।

इस मुद्दे पर हमारा निष्कर्ष यह है कि मनुष्य समझदार होकर ही उपरोक्त कार्य को कर पाता है। जब तक मनुष्य समझदार नहीं हो पाता है तब तक समस्या का ही कारक होता है।

समझदार मानव भोग, संग्रह, शोषण, विरोध और विद्रोह मानसिकता से मुक्त होकर न्यायपूर्ण व्यवहार करने की क्षमता सम्पन्न होता है एवं मानवीय व्यवस्था के सभी आयामों में भागीदारी करता है।

(क्रमशः दो पर)

उद्देश्य

1. प्रत्येक व्यक्ति में समाधान, सामाजिकता और स्वावलम्बन प्रमाणित होना।

(अ) समाधान का तात्पर्य स्वयं में व्यवस्था, परिवार में व्यवस्था, समाज में व्यवस्था, प्रकृति में व्यवस्था और अस्तित्व में व्यवस्था का बोध (समझ) होना।

(ब) सामाजिकता का तात्पर्य मानव सम्बन्धों की पहचान, समाज मूल्यों का निर्वाह एवं परस्पर मूल्यांकन पूर्वक उभयतृप्ति प्रमाणित होना।

(स) स्वावलम्बन का तात्पर्य प्राकृतिक संतुलन को ध्यान में रखते हुए उत्पादन और सेवा की मानसिकता एवं व्यवसायिक निपुणता कुशलता प्रमाणित होना।

2. प्रत्येक परिवार में समृद्धि प्रमाणित होना। समृद्धि का तात्पर्य परिवार की आवश्यकता से अधिक उपयोगी वस्तुओं को उत्पादन और सेवा पूर्वक उपलब्ध करना।

3. समाज में अभय व सह-अस्तित्व प्रमाणित होना।

(अ) अभय का तात्पर्य स्वास्थ्य संयम सुरक्षा, आर्थिक संसाधनों की सुरक्षा व न्याय (व्यक्ति के सम्मान की) सुरक्षा उपलब्ध होना

(ब) सह-अस्तित्व का तात्पर्य प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखना।

(क्रमशः तीन पर)

विधि

शिक्षण व प्रशिक्षण पूर्वक पूर्वोक्त लक्ष्य को प्राप्त किया जाएगा। सर्वप्रथम मानव संचेतना शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, अमरकण्टक द्वारा शिक्षकों को तैयार किया जाएगा। ऐसे शिक्षक स्थानीय बच्चों को विद्यालय में नियमित शिक्षा देंगे एवं युवा, प्रौढ़ और वृद्ध व्यक्ति को 'जीवन शिक्षा' शिविर द्वारा समाधानित, सामाजिक, स्वावलम्बी और साकार होने के लिए प्रशिक्षण देंगे।

सभी शिक्षक समाधानित, सामाजिक, स्वावलम्बी और साकार होंगे। ये शिक्षक गण शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए वेतन नहीं लेंगे।

शिक्षक स्वावलम्बी रहकर शिक्षा प्रदान करने के लिए अभिभावक विद्यालय होगा जिसमें स्वावलम्बन के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध होगा। इन्हीं संसाधनों का उपयोग विद्यार्थियों को स्वावलम्बन का प्रशिक्षण देने के लिए किया जाएगा।

सभी स्थानीय लोग व्यवस्था में भागीदारी करने योग्य क्षमता सम्पन्न होने पर पाँच समितियाँ बनाई जायेगी।

1. शिक्षा संस्कार समिति – यह समिति सभी व्यक्तियों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी का निर्वाह करेगी।
2. न्याय-सुरक्षा समिति – क्षेत्र के सभी लोगों को न्याय सुलभ कराने एवं प्राकृतिक संतुलन

(क्रमश: चार पर)

को बनाए रखने की जिम्मेदारी का निर्वाह करेगी।

3. स्वास्थ्य संयम समिति - स्थानीय सभी लोगों के स्वास्थ्य संयम की जिम्मेदारी का निर्वाह करेगी।

4. उत्पादन कार्य समिति - स्थान विशेष में उत्पादन के अवसर, संभावना तथा तकनीकी उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी का निर्वाह करेगी। यातायात सड़क, आवागमन सिंचाई परिवहन और दूरसंचार की जिम्मेदारी का निर्वाह करेगी।

5. विनिमय कोष समिति - शोषण मुक्त विनिमय एवं भविष्य के लिए आवश्यक वस्तुओं का कोष बनाए रखने की जिम्मेदारी का निर्वाह करेगी।

इन सभी समितियों के सदस्य समाधानित, सामाजिक, स्वावलम्बी एवं अवैतनिक होंगे।

इन सभी समितियों में तालमेल को सुनिश्चित करने के लिए एक सभा का गठन किया जाएगा जिसमें प्रत्येक परिवार के प्रतिनिधि भागीदारी करेंगे।

(क्रमशः पांच पर)

अभिभावक विद्यालय

शिक्षक :- प्राथमिक कक्षाओं में प्रत्येक 20 से 30 विद्यार्थियों को शिक्षित करने के लिए एक शिक्षक का प्रावधान होगा।

संसाधन - 1. प्राथमिक शाला के छः कमरों का विद्यालय भवन

2. न्यूनतम छः शिक्षकों को सपरिवार रहने के लिए आवासीय व्यवस्था
3. कर्मशाला
4. गोशाला दुधारु गाय व बैल सहित
5. 20-25 एकड़ कृषि योग्य भूमि
6. कृषि के लिए सामान्य यंत्र और उपकरण
7. जल की सुविधा
8. गोबर गैस संयंत्र
9. विद्युत की सामान्य सुविधा
10. सौर ऊर्जा यंत्र और उपकरण
11. पवन शक्ति चालित यंत्र व उपकरण

इन संसाधनों का स्वामित्व 'अभिभावक विद्यालय' का होगा। यह किसी व्यक्ति की निजी सम्पत्ति नहीं होगी।

विद्यालय स्थापित होने के बाद इसकी सुरक्षा व देखभाल का दायित्व शिक्षा-संस्कार समिति का होगा। स्थानीय प्रत्येक परिवार इसे बनाए रखने के लिए एक न्यूनतम राशि देकर भागीदारी का निर्वाह करेंगे।

(क्रमशः छः पर)

कार्ययोजना

लोकशक्ति योजना पाँच चरण मे पूरी होगी।

प्रथम चरण - मानव संचेतना शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, अमरकण्टक शिक्षण और प्रशिक्षण पूर्वक शिक्षको को तैयार करेगा।

प्रत्येक 1000 जनसंख्या पर सामान्यतः 5 शिक्षक प्रशिक्षित करने का लक्ष्य होगा।

अनुमानित समय - एक वर्ष

द्वितीय चरण - प्रशिक्षित शिक्षक एवं मानव संचेतना शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, अमरकण्टक के शिक्षक साथ मिलकर स्थानीय लोगों को प्रशिक्षित करेंगे।

(अ) शाला में विद्यार्थीयों को नियमित शिक्षा (प्राथमिक शिक्षा कक्षा 5 तक)

प्रथम वर्ष में एक साथ कक्षा एक और कक्षा दो प्रारंभ किया जायेगा। प्रत्येक वर्ष एक-एक कक्षा बढ़ाते हुए 4 वर्ष में कक्षा 5 तक शिक्षण कार्य सम्पन्न होगा।

(ब) शिक्षक गण स्थानीय निवासीयो को प्रशिक्षित करेंगे। क्षेत्र के प्रत्येक निवासीयों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रहेगा।

अनुमानित समय - 2 वर्ष

तृतीय चरण - स्थानीय प्रशिक्षित लोक शक्ति, प्रशिक्षित शिक्षक और मानव संचेतना शोध एवं

(क्रमशः आगे पर)

प्रशिक्षण संस्थान अमरकण्टक के शिक्षक मिलकर निम्न दो समितियों का गठन करेंगे --

1. न्याय सुरक्षा समिति
2. स्वास्थ्य संयम समिति

(प्रथम चरण के बाद ही शिक्षकों के रूप में शिक्षा-संस्कार समिति कार्यरत हो जाएगी)

अनुमानित समय- एक वर्ष

<u>चतुर्थ चरण</u> :- पूर्व में निर्धारित तीनों समितियाँ एवं मानव संचेतना शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान अमरकण्टक के शिक्षक मिलकर निम्न दो समितियों का गठन करेंगे --

1. उत्पादन कार्य समिति
2. विनिमय कोष समिति

अनुमानित समय - एक वर्ष

<u>पंचम चरण</u>. पाँचों समितियाँ और मानव संचेतना शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, अमरकण्टक के शिक्षक मिलकर 'स्थानीय सभा' का गठन करेंगे।

स्थानीय सभा व पाँचों समितियों के सदस्य मिलकर व्यवस्था का सम्पूर्ण कार्य स्वयं स्फूर्त विधि से करेंगे।

(क्रमशः आठ पर)

मूल्यांकन

लोक शक्ति योजना का मूल्यांकन त्रि आयामी होगा

प्रथम आयाम में संसाधनों का निर्माण, सुरक्षा व सदुपयोगिता का मूल्यांकन होगा।
मूल्यांकन कार्य मानव संचेतना शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान अमरकण्टक और अन्य समाज सेवी व्यक्ति तथा संस्था द्वारा किया जायेगा।

द्वितीय आयाम में शिक्षक प्रशिक्षण कार्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों का मूल्यांकन होगा।
मूल्यांकन कार्य मानव संचेतना शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, अमरकण्टक और अन्य अनुभवी व्यक्तियों द्वारा किया जाएगा।

तृतीय आयाम में सम्पूर्ण योजना एवं इसकी सार्थकता का मूल्यांकन किया जाएगा।
मूल्यांकन कार्य मानव संचेतना शोध एवं ~~अनुसंधान~~ प्रशिक्षण संस्थान अमरकण्टक और अन्य अनुभवी व्यक्तियों द्वारा किया जाएगा।

(क्रमशः नौ पर)

शिक्षा स्रोत • ([illegible])

सम्पूर्ण शिक्षण-प्रशिक्षण का स्रोत मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) होगा। इसके प्रणेता श्री ए. नागराज, अमरकण्टक हैं।

यह दर्शन चार भागों में है -

1. मानव व्यवहार दर्शन 2. मानव कर्म दर्शन
3. मानव अभ्यास दर्शन 4. मानव अनुभव दर्शन

दर्शन के अनुसार सह-अस्तित्ववादी विचार तीन भागों में प्रस्तुत है -

1. समाधानात्मक भौतिकवाद
2. व्यवहारात्मक जनवाद
3. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

दर्शन, और विचारों के आधार पर तीन शास्त्र प्रस्तुत हैं -

1. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान
2. आवर्तनशील अर्थशास्त्र
3. व्यवहारवादी समाजशास्त्र

दर्शन, विचार व शास्त्रों के आधार पर तीन योजनाएँ प्रस्तुत हैं -

1. जीवन विद्या योजना
2. मानव संचेतनावादी शिक्षा संस्कार योजना
3. परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना।

(क्रमशः दस पर)

कक्षा → / अध्ययन वस्तु ↓	एक	दो	तीन		पाँच
1. मानव सम्बन्ध	सम्बन्ध एवं मूल्यों का सम्बोधन (उच्चारण)	संबन्धों व मूल्यों की पहचान क्रिया-कलाप के रूप में	सम्बन्धों व मूल्यों का निर्धारण	सम्बन्धों और मूल्यों का निर्वाह	सम्बन्धों की पहचान मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन व उभयतृप्ति का प्रमाण
2. नैसर्गिक सम्बन्ध	इकाईयों का सम्बोधन	इकाईयों की पहचान	नाना प्रकार इकाईयों की उपयोगिता का पहचान	संतुलन के रूप में उपयोगिता की पहचान	सभी अवस्थाओं में परस्पर पूरकता की पहचान
3. अस्तित्व में सह-अस्तित्व	अस्तित्व का सम्बोधन	सह-अस्तित्व का पहचान एवं स्वीकृति	इकाईयों में क्रियाशीलता एवं क्रम (क्रिया श्रृंखला) में व्यापकता एवं पारदर्शिता	इकाईयों में क्रियाशीलता एवं नियंत्रण	इकाईयों की परस्पर पूरकता, स्थिति-विकास और विकास
4. जीवन का स्वरूप	जीवन के बल, शक्तियों का नाम	जीवन शक्तियों (चिंतन, विचार व इच्छा) की पहचान	चयन, आस्वादन, तुलन, विश्लेषण क्रिया की पहचान	चिंतन व चित्रण क्रिया की पहचान	बोध, अनुभव, संकल्प व प्रामाणिकता की पहचान, एवं स्वरूप,
5. शरीर और स्वास्थ्य संयम	शरीर के अंग प्रत्यंगों का सम्बोधन व पहचान	शरीर के अंग प्रत्यंगों की प्रयोजन एवं उनकी स्वच्छता	शरीर के ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों के क्रियाकलापों की पहचान एवं जीवन क्रिया से उनका सम्बन्ध	शरीर स्वास्थ्य संयम विधि एवं आंतरिक अवयवों की पहचान	जीवन जागृति के अर्थ में शरीर के प्रयोजन की पहचान
6. खेल एवं कर्माभ्यास	खेल व कर्माभ्यासों का नाम	खेलों के स्वरूप की पहचान कर्माभ्यास के स्वरूप की पहचान	खेलों का प्रयोजन कर्माभ्यास का प्रयोजन	खेल व अभ्यास कर्माभ्यास का तार्किकता व प्रयोग विधि	खेल, व्यायाम, आसन, प्राणायाम का अभ्यास • प्राथमिक उपचार • कर्माभ्यास • [illegible] का कर्माभ्यास